गुरु घासीदास विश्वविद्यालय,बिलासपुर(छ.ग.)

प्रेस विज्ञप्ति

दिनांक : 02.10.2011

बिलासपुर : गुरु घासीदास विश्वविद्यालय के तत्वावधान में गांधी एवं शास्त्री जयंती तथा अन्तर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस के अवसर पर 02 अक्टूबर, 11 को प्रबन्ध अध्ययन विभाग के सभागार में 'विश्व शान्ति गांधी जी के विचारों से ही संभव है' विषय पर परिचर्चा का आयोजन किया गया। परिचर्चा में सच्चिदानन्द साहू ने प्रथम, किरण साहू ने द्वितीय व मारुति नन्दन ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में माननीय उपकुलपति डॉ. पी.सी. उपाध्याय ने कहा कि आज का दिन पूरे विश्व के लिए महत्वपूर्ण है। आज के दिन युग पुरुष महात्मा गांधी एवं विशेष सपूत कर्मठ नेता लाल बहादुर शास्त्री ने जन्म लिया। दोनों महापुरुषों में अद्‌भुत आत्मबल व शक्ति थी। गांधी जी व्यक्ति नहीं विचार थे। आज पूरा विश्व समझने लगा है कि विश्व शान्ति गांधीजी के विचारों से ही संभव है। विश्व में स्थायी विकास गांधीजी के बताये मार्ग पर चल कर ही संभव है। गांधी ने सत्य और अहिंसा का संदेश दिया। उन्होंने गांधीजी की प्रसिद्ध पुस्तक 'सत्य पर प्रयोग' जरूर पढ़ने की सलाह दी। उन्होंने कहा कि गांधी जी का समूचा जीवन सत्य व अहिंसा पर आधारित था। गांधी के विचारों व सिद्धांतों को अगर थोड़ा भी अमल में लायें तो हमारा जीवन सफल हो सकता है। आज हर व्यक्ति व्यक्गित, सामाजिक स्तर पर अशान्त है। पूरे विश्व में अशान्ति है। गांधी ने जो कुछ भी सोचा है, लिखा है उसी से हल निकल सकता है। 'सत्यम् शिवम् सुन्दरम्' की चर्चा करते हुए डॉ. उपाध्याय ने कहा कि शिवकारी वही हो सकता है जो सत्य है। जो शिवकारी नहीं है वह सुन्दर नहीं है। हमें अच्छे विचारों को अपनाने की जरूरत है।

प्रतिभागियों में मारुति नन्दन तिवारी ने कहा कि गांधी के विचार सत्य व अहिंसा पर आधारित हैं। अपनी अन्तरात्मा की आवाज सुनो। किसी के प्रति अहिंसा की बात न सोचो। सबसे पहले अपने अन्दर शान्ति लायें तभी विश्व में शांति स्थापित की जा सकती है। शक्ति विकास चतुर्वेदी ने कहा कि शक्ति प्रदर्शन से शान्ति नहीं लायी जा सकती। अहिंसा व सत्य से ही आतंकवाद को समाप्त किया जा सकता है। अहिंसा कायरता नहीं है। निकिता जकारिया ने कहा कि ग्लोबल पीस गांधी के दर्शन से ही आ सकती है। व्यक्ति स्वयं द्वारा अनुशासित हो किसी बाहरी शक्ति से नहीं। विश्व शांन्ति के लिए अहिंसा ही सबसे शक्तिशाली हथियार है। किरण साहू ने कहा कि आज पूरा विश्व हिंसा व आतंकवाद से त्रस्त है। इसे किसी हथियार से खत्म नहीं किया जा सकता। सादा जीवन उच्च विचार से ही शान्ति आ सकती है। अन्ना हजारे ने हाल ही में अहिंसात्मक आन्दोलन के जरिये जन लोकपाल बिल के लिए सरकार को झुकाने का काम किया। सच्चिदानन्द साहू ने कहा कि गांधी जी अहिंसा के व्यावहारिक पिता थे। हिंसा से कोई हल नहीं निकल सकता। प्रेम व क्षमा से ही शान्ति स्थापित की जा सकती है।

अक्षय दूबे ने कहा कि शान्ति प्रेम से ही उपजती है। प्रेम वहीं होता है जहां त्याग होता है। गलाकाट प्रतियोगिता व पाने की अभिलाषा से ही अशान्ति आती है। तृप्ति कुजूर ने कहा कि गांधी जी ने सिर्फ व सिर्फ शान्ति को ही बढ़ावा दिया, इसलिए वे आज पूरे विश्व में माननीय हैं। दया, प्रेम व शान्ति की स्थापना गांधी के विचारों से ही की जा सकती है।

इसके पहले उपकुलपति डॉ. पी.सी.उपाध्याय व छात्र कल्याण अधिष्ठाता प्रो. एस.व्ही.एस. चौहान ने मांग सरस्वती की प्रतिमा तथा महात्मा गांधी व लाल बहादुर शास्त्री के चित्रों पर माल्यार्पण व दीप प्रज्ज्वलन से कार्यक्रम का शुभारंभ किया। इस अवसर पर प्रबंध संकाय भवन परिसर स्थित लाल बहादुर शास्त्री की आदमकद प्रतिमा पर भी पुष्पार्चन किया गया। इसी क्रम में उपकुलपति डॉ. पी.सी. उपाध्याय ने अहिंसा एवं शान्ति के लिए उपस्थित लोगों को शपथ दिलायी। अतिथियों का स्वागत करते हुए छात्र कल्याण अधिष्ठाता प्रो. चौहान ने कहा कि आज विश्व में सर्वत्र अशांति का माहौल है। आतंकवाद बढ़ रहा है। ऐसी स्थिति में गांधी जी के विचारों की प्रासंगिकता बढ़ गयी है। उनके विचारों से ही विश्व में शान्ति स्थापित की जा सकती है। इस अवसर पर प्रो. बी.एम. तिवारी, प्रो. एस.पी. सिंह, प्रो. ए.एस. रणदिवे, प्रोत्र एल.पी. पटेरिया, प्रो. एस.पी. सिंह सहित समस्त संकायाध्यक्ष, विभागाध्यक्ष, शिक्षकगण के साथ ही बड़ी संख्या में छात्र–छात्राएं उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन डॉ. कौशल किशोर व धन्यवाद ज्ञापन छात्र कल्याण अधिष्ठात प्रो. चौहान ने किया।

मीडिया प्रभारी